आचार्य कनकनन्दि

जीवन-परिचय : सिद्धान्त-ग्रन्थों के रचयिता के रूप में कनकनन्दि का नाम नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती के समान आदरणीय है, क्योंकि कनकनन्दि आचार्य को भी सिद्धान्तचक्रवर्ती कहा गया है, लेकिन इनका विशेष परिचय उपलब्ध नहीं होता।

कनकनन्दि का समय 10वीं शताब्दी का अन्तिम भाग और 11वीं शताब्दी का प्रारम्भ माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य ने सिद्धान्त सम्बन्धी एक ग्रन्थ की रचना की है—

1. विस्तरसत्त्वत्रिभंगी : आचार्य कनकनन्दि ने इन्द्रनन्दि गुरु के पास समस्त सिद्धान्त को सुनकर 'सत्त्वस्थान' ग्रन्थ लिखा है। यह जैन सिद्धान्त भवन आरा में उपलब्ध है। यह सिद्धान्त सम्बन्धी ग्रन्थ है। इसकी गाथाएँ नेमिचन्द्राचार्य ने अपने गोम्मटसार में भी सम्मिलित की हैं।